

ध्यानशतक (फोल्डर नं. ००१११६)

मुख्य टाइटल	
अनुक्रमणिका	५
प्रकाशकीय	९
भूमिका	११
प्रस्तावना	२५
ध्यानशतक	५७
मङ्गलाचरण (गाथा १)	५७
ध्यान का लक्षण (गाथा २)	५८
ध्यान का काल तथा स्वामी (गाथा ३)	५९
ध्यान के भेद: उद्देश्य एवं फल (गाथा ४-५)	६०
आर्त ध्यान के भेद	६१
(१) अनिष्ट संयोग (गाथा ६)	६१
(२) आतुर चिन्ता (गाथा ७)	६२
(३) इष्ट वियोग (गाथा ८)	६३
(४) निदान चिन्तन (गाथा ९)	६३
आर्त ध्यान का कारण और परिणाम (गाथा १०)	६४
मुनि के आर्त ध्यान की सम्भावना एवं निराकरण (गाथा ११-१२)	६५
आर्त ध्यान संसार का कारण (गाथा १३)	६६
आर्त ध्यानी की लेश्याएँ (गाथा १४)	६६
आर्त ध्यानी के परिचायक लिङ्ग (गाथा १५)	६७
आर्त ध्यानी के परिचायक लिङ्ग (गाथा १६-१७)	६८
गुणस्थान की दृष्टि से आर्त ध्यानी (गाथा १८)	७०
रौद्र ध्यान के भेद	७०
(१) हिंसानुबन्धी (गाथा १९)	७०
(२) मृषानुबन्धी (गाथा २०)	७२
(३) स्तेयानुबन्धी (गाथा २१)	७३
(४) विषयसंरक्षणनुबन्धी (गाथा २२)	७४
स्थान की दृष्टि से रौद्र ध्यानी (गाथा २३)	७५
रौद्र ध्यान के कारण और परिणाम (गाथा २४)	७५
रौद्र ध्यानी की लेश्याएँ (गाथा २५)	७६
रौद्र ध्यानी के दोष (गाथा २६)	७६
रौद्र ध्यानी के अनुमापक लिङ्ग (गाथा २७)	७७
धर्म ध्यान के प्ररूपक द्वारों का नामनिर्देश (गाथा २८-२९)	७८

धर्म ध्यानोपयोगी भावनाएँ – नामनिर्देश (गाथा ३०)-----	७८
(१) ज्ञान भावना (गाथा ३१)-----	७८
(२) दर्शन भावना (गाथा ३२)-----	७९
(३) चारित्र भावना (गाथा ३३)-----	८०
(४) वैराग्य भावना (गाथा ३४)-----	८०
धर्म ध्यान योग्य देश (गाथा ३५-३६)-----	८२
धर्म ध्यान योग्य स्थान (गाथा ३७)-----	८३
धर्म ध्यान काल (गाथा ३८)-----	८३
धर्म ध्यान योग्य आसन (गाथा ३९)-----	८४
धर्म ध्यान हेतु योग-समाधान अनिवार्य, देश-काल-आसन नियत नहीं (गाथा ४०-४१)-----	८४
धर्म ध्यान के आलम्बन (गाथा ४२-४३)-----	८५
धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान निग्रह क्रम (गाथा ४४)-----	८७
धर्म ध्यान के ध्यातव्य- नामनिर्देश (गाथा ४५)-----	८८
(१) आज्ञा विचय (गाथा ४६-५०)-----	८८-९०
(२) अपाय विचय (गाथा ५१)-----	९१
(३) विपाक विचय (गाथा ५२)-----	९२
(४) संस्थान विचय (गाथा ५३-६२)-----	९३-९६
धर्म ध्यान का श्रेष्ठ ध्यातव्य – स्वसमय (गाथा ६३)-----	९७
धर्म ध्यान के ध्यातामुनि का स्वरूप (गाथा ६४)-----	९८
धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान के (गाथा ६५-६६)-----	९८-९९
ध्याता की विशेषता-----	१०१
धर्म ध्यानी की लेश्याएँ (गाथा ६७-६८)-----	१०१
धर्म ध्यानी के ज्ञापक लिङ्ग (गाथा ६९)-----	१०३
शुक्ल ध्यान के आलम्बन (गाथा ७०)-----	१०३
ध्यान की प्रक्रिया-----	१०४
मन-वचन-काय निरोध – शैलेशी केवली (गाथा ७१-७७)-----	१०४-१०६
शुक्ल ध्यान के भेद-----	१०७
(१) पृथक्त्व वितर्क विचार (गाथा ७८-७९)-----	१०७
(२) एकत्व वितर्क अविचार (गाथा ८०-८१)-----	१०९
(३) सूक्ष्मक्रिया अनिवृत्ति (गाथा ८२)-----	१११
(४) व्युच्छिन्न क्रिया अप्रतिपात्ति (गाथा ८३)-----	१११
शुक्ल ध्यान के भेदों में योग-निरोध की स्थिति (गाथा ८४)-----	११२
छद्मस्थ और केवली के ध्यान की विशेषता (गाथा ८५-८७)-----	११३
शुक्ल ध्यान भावित ध्याता की चार अनुप्रेक्षाएँ (गाथा ८८-८९)-----	११४

शुक्लध्यान और लेश्या (गाथा ९०-९३)-----	११७
शुक्ल ध्यान के लिङ्ग-----	११९
१. अव्यथा २. असम्मोह ३. विवेक ४. व्युत्सर्ग (गाथा ९४-९५)-----	११९
धर्म ध्यान एवं शुक्ल ध्यान के फल की तुलना (गाथा ९६-९७)-----	१२०
ध्यान से कर्मक्षय की प्रक्रिया (गाथा ९८-१०३)-----	१२०-१२२
ध्यान का इहलौकिक फल (गाथा १०४-१०५)-----	१२३
ध्यान का उपसंहार तथा ग्रन्थकर्ता नामनिर्देश (गाथा १०६-१०७)-----	१२३
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-----	१२५